पारिणामिक भाव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पारिणामिक भाव होने से द्रव्य का स्वरूप मात्र लाभ का कारण है और इस भाव का कारण पारिणामिक भाव है। पारिणामिक भाव कर्म के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम के बिना होते हैं। ये मुख्यतः जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व के भेद से नौ प्रकार के होते हैं। जीवत्व का अर्थ है चैतन्य। भावों के प्रकरण में चैतन्य गुण सापेक्ष जीवत्व की मुख्यता होती है। जीवन क्रिया सापेक्ष की नहीं। चैतन्य गुण सब जीवों में समान रूप से पाया जाता है। यह कारण निरपेक्ष है। इसलिए इसे पारिणामिक कहा जाता है। व्यवहारनय से इन्द्रिय,बल, आयु और श्वासोच्छवास इन चार प्राणों से पहले जीवित रहना, वर्तमान में जीवित रहना और भविष्य में जीवित रहना जीवत्व भाव है।

जिसके सम्यक् दर्शन प्रकट होने की योग्यता होती है वह भव्य होता है। उसके परिणाम को भव्यत्व कहते हैं। जिसके सम्यक् दर्शन प्राप्त करने की योग्यता नहीं होती हैं वह अभव्य कहलाता है। उसके परिणाम को अभव्यत्व भाव कहते हैं। अस्तित्व, कर्तृत्व, भोगर्तृत्व आदि भी पारिणामिक भाव हैं। ये जीवन के अलावा अन्य द्रव्यों में भी पाये जाते हैं। भव्य जीव पहले से चौदहवें गुण स्थान तक रह सकता है। मोक्ष में भव्यत्म भाव नहीं रहता। परन्तु अभव्य प्रथम मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में ही रहता है। वह मोक्ष का पात्र कभी नहीं हो सकता। मिथ्यात्व की मन्दता में मुनि व्रत धारण कर नवम ग्रैवेयक तक उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार मूल में जीव में पांच भाव तथा उत्तर भेद करते हुए जीव के अनेक भाव हो सकते हैं। ये जीव के स्वतत्व कहलाते हैं।

ये ही पांच भाव आत्मा के स्वरूप हैं। संसारी या मुक्त कोई भी आत्मा हो उसके सभी पर्याय उक्त पांच भाव में ही किसी न किसी भाव वाले अवश्य होंगे। पांचों भाव सभी जीवों में एक साथ मिलें यह कोई आवश्यक नहीं है। समस्त मुख्य जीवों में दो भाव होते हैं– क्षायिक और पारिणामिक। सांसारिक जीवों में कोई तीन भाव वाला, कोई चार भाव वाला और कोई पांच

भाव वाला होता है। दो भाव वाला कोई नहीं होता। इन पांचों भावों को जीव का स्वरूप कहा गया है। जीव राशि की अपेक्षा से या किसी जीव विशेष में होने की अपेक्षा से यह कहा गया है। जीवत्व को छोड़कर अन्य भेद आत्मा के उपलक्षण हैं। जीवत्व आत्मा का लक्षण हैं

जीव जिसे आत्मा और चेतन भी कहते हैं वह अनादि सिद्ध स्वतंत्र द्रव्य है। तात्विक दृष्टि से अरूपी होने के कारण उसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा नहीं होता। वह स्व–संवेदन प्रत्यक्ष तथा अनुमानादि से जाना जाता है। उपयोग को जीव का लक्षण कहा गया है। संसार और जड़ और चेतन पदार्थों का मिश्रण है। जड़ और चेतन का विवेकपूर्वक निश्चय करना उपयोग के द्वारा ही हो सकता है। उपयोग चैतन्य का अन्वयी है अर्थात चैतन्य को छोड़कर वह अन्यत्र नहीं रहता। इसे परिणाम उपयोग कहते हैं। जीव द्रव्य स्वतः सिद्ध है, अमूर्त है। ज्ञान, दर्शन, सुख, विर्यादिक अनन्तधर्मात्मक है। वह कभी नष्ट नहीं होता।

जीव में साधारण और विशेष गुण पाये जाते हैं। जीव द्रव्य लोक के बराबर असंख्या प्रदेशी है। इसलिए जीव विश्व रूप है अर्थात लोकस्वरूप है। लोक के असंख्यातवें भाग में है। ज्ञान की अपेक्षा विश्व रूप है। किसी पदार्थ से इसका सम्बन्ध नहीं है। तथापि यह सभी पदार्थों को जानने वाला है। यह अखण्ड द्रव्य है। शुद्धनय की अपेक्षा यह एकरूप है। इसमें भेद की कल्पना नहीं है। पर्याय की दृष्टि से संसारी और मुक्त इसके दो रूप हैं।

संसरण करने को संसार कहते हैं। जिसका अर्थ परिवर्तन है। जिन जीवों में यह गुण पाया जाता है उन्हें संसारी जीव कहते हैं। द्रव्य , क्षेत्र, काल, भव और भाव परिवर्तन के भेद से इनके पांच भेद हैं। इन्हीं पांचों परिवर्तनों के कारण जीव संसार में भ्रमण करता है। अपने कर्मों के कारण ही जीव को भवान्तर की प्राप्ति होती है। द्रव्य और भावबंध ही संसार है। जीव एक शरीर को छोड़ता है और दूसरे नये शरीर को धारण करता है। यहा परम्परा चलती रहती है। इस प्रकार अनेक बार शरीर को ग्रहण करना और छोड़ना यह परम्परा चलती रहती है। घातीकर्मों के कारण जीव संसार में भ्रमण करता रहता है। संसारी जीव भव्य और अभव्य दो प्रकार के हैं। मन सहित अर्थात संज्ञी और मन रहित अर्थात असंज्ञी के भेद से दो प्रकार के हैं। त्रस और स्थावर के भेद से भी दो प्रकार के हैं। बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा के भेद

से तीन प्रकार का है। गति के भेद से चार प्रकार का है। औपशमिक आदि भावों की अपेक्षा पांच प्रकार का है।

जो द्रव्य क्षेत्र, काल, भव और भाव इन पंच परावर्तन रूप संसार से मुक्त है। वे मुक्त जीव कहलाते हैं। जिनके द्रव्य व भाव कर्म नष्ट हो गये हैं वे मुक्त जीव कहलाते हैं। अष्टकर्म नष्ट हो गये हैं, शरीर रहित हैं, अनन्त सुख व अनन्त ज्ञान में आसीन हैं और परम प्रभुत्व को प्राप्त हैं ऐसे सिद्ध भगवान मुक्त हैं। शुद्ध चेतनात्मा या केवलज्ञान लक्षण वाले जीव मुक्त जीव हैं। कर्ममल से मुक्त जीवात्मा ऊर्ध्वलोक के अंत को प्राप्त करके सर्वज्ञ सर्वदर्शी अनन्त अनिन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। मुक्त जीव ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाले होते हैं। इसका कारण यह है कि मुक्त जीव अमूर्तिक, भाररहित एवं स्थानान्तरित होने के कारण ऊर्ध्वगति होना इनका स्वभाव है। जो जीव कर्मों से रहित होता है वह शुद्ध जीव है।